वर्ष - 6 फरवरी, 2019 बसंत पञ्चमी, सं. 2075 वि. ISSN 2349-1426

तत्त्व-सिन्धु

कुमारस्वामी फाउण्डेशन
लखनऊ

प्राक्कथन

परम्परा

संस्कृति-विमर्श / श्रीकरपात्रीजी महाराज - 7

प्रतिभास

व्यवस्था (Order) का संधान / रामाश्रय राय - 15

सम्यक् धर्मचेतना और उसके बुद्धिजीवी : सही मानचित्र की तलाश में / रमेशचन्द्र शाह - 42

Gandhian Concept of *Satyāgraha* / Arun Mishra - 54

Who is Afraid of Deen Dayal Upadhyaya? / Sudhir Kumar - 62

ईश्वरीय आदेश के पंथ / बनवारी - 92

भारतीय परम्परा का लोकतंत्र / राजकुमार - 97

हिन्दी की प्रतिष्ठा और ब्रजभाषा के पुण्य की पड़ताल / कृष्णचन्द्र गोस्वामी 'विभास' - 103

न्याय की परम्परागत और आधुनिक दृष्टि / नीरज कुमार सिंह - 119

राष्ट्र : भारतीय दृष्टि / अनुज कुमार मिश्र - 128

प्रेरणा

प्रोफेसर अवधकिशोर शरण : एक परिचय / रमेशचन्द्र तिवारी - 143

पुस्तक

East and West and Other Essays : Ananda K. Coomaraswamy / बृजेन्द्र पाण्डेय - 159

The Crisis of the Modern World : René Guénon / कुमार अर्चित पाण्डेय - 177

परिचय

राष्ट्र : भारतीय दृष्टि

अनुज कुमार मिश्र

भारत और भारतीयों के लिए राष्ट्र की संकल्पना भारत की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति ही रही है। भारतवर्ष का समृद्ध वाङ्मय इसी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को प्रतिध्वनित करता है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से आशय है कि किसी राष्ट्र की पहचान उसकी सांस्कृतिक गहराई की उपज है, इसलिए वह अधिक स्वानुभूतिगम्य तथा जनमानस के लिए अधिक उपयोगी है। प्राचीन साहित्य से लेकर वर्तमान की राष्ट्रीय अभिकल्पना तक, जब कभी भारतीय राष्ट्रवाद की बात होती है, भारतीय संस्कृति की मान्यताएँ इसकी विवेचना के केन्द्र में रहती हैं। वैदिक, उपनिषदिक, पौराणिक साहित्य के साथ आधुनिक मनीषियों ने भी भारत और भारतीयता की संकल्पना इसकी संस्कृति के संदर्भ में की है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में राष्ट्र का अर्थ है, "वह जाति जिसके एक ही पूर्वज हों, जो एक ही भाषा बोलती हो, जिसका एक इतिहास-एक संस्कृति हो और जो एक ही शासित-सीमित राज्य-भूमि में बसती हो, राष्ट्र के अंतर्गत आती है।"[1] इस परिभाषा पर आज संसार का एक भी राष्ट्र खरा नहीं उतरता है। यद्यपि बेनेडिक्ट एंडर्सन ने राष्ट्रवाद को मार्क्सवादियों की तरह ही 'राष्ट्रों के काल्पनिक समुदाय' की संज्ञा दी। एंडर्सन के अनुसार, "राष्ट्र काल्पनिक है क्योंकि सबसे छोटे राष्ट्र के सदस्य भी अपने राष्ट्र के अधिकांश दूसरे सदस्यों के बारे में नहीं जानते, वे न कभी उनसे मिलते हैं और न कभी उनकी आवाज सुनते हैं। इसके बावजूद हर सदस्य के दिमाग में राष्ट्र की छवि बसी रहती है। हर राष्ट्र में कायम गहरी असमानता और शोषण के बावजूद राष्ट्र को गहरे और क्षैतिज (या समस्तरीय) बंधुत्व का पर्याय माना जाता है।"[2] परन्तु एंडर्सन महोदय का यह विचार उचित नहीं लगता, क्योंकि निष्ठाएँ सिर्फ काल्पनिक बिम्ब मात्र नहीं होतीं, बल्कि यह सभ्यता और संस्कृति का आधार होती हैं। सनातन संस्कृति के लिए यह सनातन आधार के रूप में हैं। भारतीय राष्ट्रवाद को इसी संदर्भ में समझा जाना चाहिए। कुछ लोगों की यह मान्यता है कि अंग्रेजों के आने पूर्व भारत में न कोई राष्ट्र था और न ही राष्ट्रीयता की कोई अवधारणा। इनका मानना है कि भारत में राष्ट्रवाद का विचार ब्रिटिश साम्राज्य के शोषण के विरुद्ध उपजी प्रतिक्रिया का परिणाम है। वर्तमान की विश्लेषण-दृष्टि सूक्ष्म के स्थूल सामान्यीकरण की दृष्टि है, जबकि भारतीय दृष्टि